

SHRI ABDUL GAFUR KHATRI

Shri Abdul Gafur Khatri is a famous name in Rogan Art. He has worked all his life to keep alive the precious Rogan Art of pigment painting on textiles creating livelihood opportunities through art and craft in a remote village of Kutch. He has single handedly led to the revival and revitalization of unique Rogan Art of painting on textiles. At the most crucial point in its history of more than 400 years, when the Art was going to become extinct for want of markets, he explored new avenues by reinterpreting their traditional skills for creating products for new markets outside of their local communities, sustaining their art.

2. Shri Khatri was born on April 28, 1965 in Nirona Village, Kutch District, Gujarat to a family of Rogan Artists. While many textile crafts are practiced in India, Rogan Art is unique due to the nature of its technique known only to a handful of Muslim Khatris who specialized in this craft for many centuries. It is one of the most difficult and complex textile craft forms. Each piece has to be uniquely created. There is no scope for creating multiples by standardizing the production process using tools such as blocks or stencils.

3. For many generations, Rogan art was the source of livelihood for the Khatris of Nirona. Local communities around them bought Rogan painted fabrics for their clothing and other uses. After 1950s, cheaper mill made and synthetic fabrics started coming into Kutch. Local customers who patronized this craft for generations shifted to buy these cheaper fabrics. By 1980s, this art craft was on the verge of extinction due to these reasons. The Khatris who had been practising this craft for many generations had no more work. They had no other livelihood options available around their village making it difficult for them to survive.

4. With the declining prospects, Shri Khatri initially decided to take up a job in Mumbai around 1980s to support his family. During this period, Kutch was facing severe droughts making it all the more difficult for the Khatris to find even casual labour work around. He realized that his family would not get other livelihood opportunities due to their age and lack of other skills or education. Due to his dedicated work over years, the traditional Rogan Art of Kutch has been saved of extinction. He successfully redefined a traditional art that had lost relevance in its local context to create products that have an international appeal. He raised the Rogan from the level of a craft once used to embellish fabrics for local communities to the level of Art. It is now globally recognized as a rare textile art among Art and Crafts lovers. Rogan is a unique art practised with minimal of tools. It requires minimal water and a small stylus for painting fabric.

5. Hundreds of people have been able to improve their livelihoods through the direct and indirect contribution of Sri. Khatri and given a new ray of hope for traditional craft practice in Kutch. He pioneered the revival, revitalization and reinterpretation of a dying traditional craft and inspired many artisans to practise their traditional craft and made it a living craft. Visit to Nirona village is now a part of the itinerary for most craft and textile lovers to Kutch which has helped sustain the village economy in a significant way, uplifting smaller crafts in the village too.

6. Shri Khatri has received many Awards for his work. He has received National Merit Certificate in 1988 and National Award in 1997 from the Ministry of Textiles, Government of India. and Gujarat State Award in 1989. He has also received Special Commendation Certificate from the Chief Minister of Gujarat in 2013 for his contribution to arts and crafts and many other awards and recognitions.

पद्म श्री

श्री अब्दुल गफुर खत्री



श्री अब्दुल गफुर खत्री, रोगन चित्रकला के क्षेत्र में एक जाना-माना नाम है। आपने जीवनभर वस्त्रों पर पुरातन पिगमेंट रोगन चित्रकला को जीवित रखने के लिए कार्य किया है और इस प्रकार दूर-दराज के क्षेत्र में कच्छ गांव में कला तथा शिल्प के जरिए जीवनयापन के अवसर सृजित किए हैं। आपने वस्त्रों पर इस अद्वितीय रोगन चित्रकला को पुन: जीवित करने तथा उसका पुनरुद्धार करने के लिए अपने अकेले दम पर कार्य किया है। इस कला के 400 वर्ष पुराने इतिहास में एक दौर ऐसा भी आया था जब यह कला बाजार के अभाव में विलुप्त होने लगी थी उस समय आपने अपने स्थानीय समुदायों के बाहर नए बाजारों के लिए उत्पादों का निर्माण करके अपने पारम्परिक कौशल को फिर से परिभाषित करते हुए अपनी कला को जीवित रखने के लिए नए-नए अवसरों की तलाश की।

2. आपका जन्म 28 अप्रैल, 1965 में निरोना ग्राम, जिला कच्छ, गुजरात में रोगन कलाकार परिवार में हुआ था। हालांकि भारत में अनेक प्रकार की वस्त्र दस्तकारी की जाती है लेकिन रोगन चित्रकला एक अद्भुत चित्रकला है क्योंकि इस कला का ज्ञान केवल कुछ खत्री मुसलमानों को ही है, जिन्हें कई सदियों से इस शिल्प में महारथ हासिल है । इसकी गणना अत्यधिक कठिन और जटिल वस्त्र शिल्प कलाओं में होती है। हर उत्पाद का अद्वितीय रूप से निर्माण किया जाना होता है। ब्लॉक अथवा स्टेंसिल जैसे औजारों का प्रयोग करके उत्पादन प्रक्रिया को मानक बनाकर अलग-अलग शिल्प वस्तुएं बनाने की इस कला में कोई गुंजाइश नहीं है।

3. रोगन चित्रकला निरोना वासी खत्री के लोगों के लिए कई पीढ़ियों से रोजी-रोटी कमाने का स्रोत रही थी। आसपास के स्थानीय समुदाय अपने परिधानों और अन्य उपयोगों के लिए रोगन चित्रकला के वस्त्र खरीदते थे। 1950 के दशक के बाद मिल निर्मित सस्ते तथा सिन्थेटिक वस्त्र कच्छ में आना शुरू हुए थे। जिन स्थानीय ग्राहकों का इस कला को कई पीढ़ियों से संरक्षण प्राप्त था वे ये सस्ते वस्त्र खरीदने लगे। 1980 के दशक तक इन कारणों से यह शिल्प कला बिलुप्त होने की कगार पर आ गई थी और इस प्रकार कई पीढ़ियों से इस कला को अपनाने वाले खत्री समुदाय के लोगों के लिए रोजी-रोटी कमाने का यह कार्य लगभग समाप्त हो गया था। उनके पास अपने गांव के आस-पास रोजी-रोटी कमाने का कोई अन्य विकल्प नहीं था और इसके परिणामत: उनका जीवन यापन कठिन हो गया था।

4. रोजी-रोटी कमाने की संभावना में निरंतर गिरावट आने के कारण, आपने अपने परिवार का भरण-पोषण करने के लिए मुम्बई में नौकरी करने का निर्णय लिया । इस अवधि के दौरान कच्छ में भीषण सूखा पड़ा और खत्री लोगों को दिहाडी मजदूर के रूप में रोजगार मिलना भी बहुत मुश्किल हो गया था। आपको अहसास हुआ कि आपके परिवार के सदस्यों को उनकी आयु के कारण तथा अन्य कौशल अथवा शिक्षा के अभाव के कारण रोजी-रोटी कमाने हेतु कोई अन्य अवसर प्राप्त नहीं होंगें । जब इस कला की स्थानीय परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता समाप्त हो चुकी थी तो उस वक्त आपने ऐसे उत्पाद बनाकर उस कला को सफलतापूर्वक फिर से परिभाषित किया जिनमें अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ग्राहकों को अपनी ओर आकृष्ट करने की क्षमता थी। स्थानीय समुदायों के लिए वस्त्रों पर कलाकारी करने हेतु उपयोग किए जाने वाले इस रोगन शिल्प को आपने कला का दर्जा दिलवाया । इस समय यह कला संसारभर में कला और शिल्प प्रेमियों के बीच दुर्लभ वस्त्रकला मानी जाती है। रोगन शिल्प बहुत ही कम औजारों के साथ की जाने वाली अद्वितीय कला है। वस्त्रों पर इस कला को उकेरने के लिए बहुत कम पानी और छोटी-सी शलाका का उपयोग किया जाता है।

5. आपके प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष योगदान से कई सौ लोग अपनी आजीविका को बेहतर बना पाए हैं और इस प्रकार कच्छ में इस पारम्परिक शिल्प को अपनाने के लिए आशा की एक नई किरण मिली है। आपने रंग भराई के पारम्परिक शिल्प को फिर से जीवित करने में महारथ हासिल की और अनेक शिल्पियों को पारम्परिक शिल्प अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया और इस प्रकार इस शिल्प को जीवंत शिल्प का रूप प्रदान किया। अब शिल्प और वस्त्र प्रेमी कच्छ की अपनी यात्रा के दौरान निरोना गांव जाना नहीं भूलते हैं। इसके फलस्वरूप, गांव में भी छोटे-छोटे शिल्पों का पुनरुत्थान हुआ है और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को बचाये रखने में मदद मिली है।

6. आपको अपने इस कार्य के लिए कई पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार की ओर से आपको वर्ष 1988 में राष्ट्रीय मेरिट प्रमाण-पत्र तथा वर्ष 1997 में राष्ट्रीय पुरस्कार और वर्ष 1989 में गुजरात राज्य पुरस्कार प्राप्त हुआ है। वर्ष 2013 में कला और शिल्प के क्षेत्र में आपके विशेष योगदान के लिए आपको गुजरात के मुख्यमंत्री की ओर से विशेष सराहना पुरस्कार भी प्राप्त हुआ तथा साथ ही उन्हें कई अन्य पुरस्कार भी प्राप्त हुए हैं।